

پاکیستانی راجسٹر کا آتمنکوادی چریڑ

پ्रभات کومار رائے

پاکیستان کا نام سمُّوچی دُنیا میں جہادی آتمنکواد کے لئے وسْتُت: پہلے سے ہی کافی بہد بدنام رہا۔ اب تو پاکیستان کے ابٹاباد شہر میں میلیٹری اکاڈمی کے نیکٹ سی آئی اے دُوارا اوساما بین الادن کی ہلاکت نے اسکے سب سے جیسا خیرخواہ امریکا کی نجروں میں بھی گیرا دیا ہے۔ امریکی سینیٹر تیڈ پورڈ نے ہاؤس اوف ریپریٹیوٹ میں پندھ هجاء کروڈ کی فوجی ایمداد کو روک دئے کا پرسٹاول پیش کیا۔ اس پرسٹاول کو امریکا کے سانسدوں کا سماں ہاسیل ہو رہا ہے۔ جہادی آتمنکواد کو لئے برسوں سے امریکا درअسال پاکیستان کے ڈبل گرم کو اس لیے بردشیت کر رہا ہے، کیونکی افغانیستان کے مورچے پر رننیتیک توار سے پاکیستان کی اسے بہد درکار رہی ہے۔ اک اور بھایانک خترا ویش کے سماں ہاسیل ہے کہ پاکیستان کو اسکے ہال پر چوڈ دئے کا نتیجا ہو سکتا ہے کہ پرمادوں بمن سے لے سے پاکیستانی راجسٹر کو جہادی آتمنکوادی پوری ترہ ہथیا لے، جیسا کہ ایتیہاس کے اک توار میں مولانا ڈمیر کی کیا دت میں جہادی تत्व افغانیستان کی راجشاہیت پر کبجا کر چکے ہے۔

یہی سب کارण رہے ہے کہ امریکا سدیوں پاک ہوکمرانوں کی ناکابیلے بردشیت بلائکمیلینگ میں فنسا ہوا ہے۔ امریکا کے رننیتیوں کا سپषٹ نظریہ ہے کہ افغانیستان کے مukaabale پاکیستان پر جہادی تتوں کا نیयंtron وسْتُت: اسکے لیے بہد بھایا وہ سا بیت ہو گا۔ امریکا ایتیہاسیک توار پر افغانیستان کے ماملے میں انجام دی گई گلتی کو کدا چیت دوہرانا نہیں چاہتا، جبکہ امریکا نے افغانیستان میں کمیونیٹیوں کی پراجیت کے تپشیات اسے پورن: پاکیستان کے بھروسے چوڈ دیا ہے۔ امریکا دُوارا افغانیستان کی عپکش کا پریماں ہوا کہ افغان-سویت یوڈھ کے احمد شاہ مسود اور گولبندیں ہیکم تیار جیسے ڈارواڈی نایکوں کو ختم کر کے پاکیستان نے اپنی فوجی تاکت کے دم خم پر کڈر پنھی تالیبانی تاکتوں کو سختانشیں کر دیا ہے۔ تالیبانی تتوں نے اوساما بین الادن کی تجیم ایکا یاد کو خولکر خلے نے کا ماؤکا فراہم کرایا۔

امریکا کے نیتیکاروں نے جہیدی آتمنکوادی تتوں کی ویڈوں کا تاکت کو کدا چیت تبا تک نہیں پہچانا، جب تک جہیدیوں نے امریکا کو ہی خونی نیشانہ نہیں بنایا۔ ولڈ ٹریڈ ٹاور کے ویڈوں کے باعث امریکا کا نظریہ پریورٹیت ہو گیا۔ ورنہ پاکیستان کی سرپرستی میں 1988 سے کشمیر میں شروع ہوئی جہادی جنگ کو امریکان نیتیکار کشمیری آزادی کی جنگ نیز پیٹ

करते रहे। विंगत 23 वर्षों के दौरान कथित जेहादियों ने जितने जख्म भारत को दिए हैं, उतने अधिक जख्म दुनिया के किसी भी मुल्क को नहीं दिए। कश्मीर और शेष भारत में जेहीदी आतंकवादियों ने एक लाख से अधिक भारतवासियों को हलाक़ किया। अमेरिका ने पाकिस्तान को जितनी विशाल वित्तीय सहायता प्रदान की उसका अधिकतर इस्तेमाल भारत को तबाह करने के लिए किया गया।

पाकिस्तानी राजसत्ता का वास्तविक चरित्र अपने स्थापना काल से ही सामंती बर्बरता से परिपूर्ण रहा, जबकि 1947 में ही मेजर जरनल अक्टबर खान की कमान में पाक़ फौज ने कश्मीर पर आक्रमण किया। सामंती बर्बर चरित्र कायम रहते ही पाकिस्तान में प्रजातंत्र बिलकुल भी टिक नहीं पाया। मौहम्मद अली जिन्ना की मौत के बाद तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री लियाकत अली का कत्ल किया गया और फिर उनके उत्तराधिकारी सिंकंटर मिर्जा का तख्ता पलट कर फौजी जरनल अयूबखान द्वारा पाक राजसत्ता हथिया ली गई। पाकिस्तान में विंगत 64 साल के अधिकतर काल में राजसत्ता पर फौज का आधिपत्य कायम रहा। पाकिस्तान में प्रगतिशील प्रजातांत्रिक ताकतें सदैव कमज़ोर बनी रही। जब कभी प्रजातांत्रिक शक्तियां हूकूमत पर काबिज हुई, तब भी पाकिस्तानी राजसत्ता में फौज के वर्चस्व को निर्णायक चुनौती पेश नहीं कर सकी। अफगानिस्तान में 10 वर्षों तक जारी रही जेहाद बनाम कम्युनिस्ट जंग के दौरान अमेरिका से प्राप्त हुई अपार अकूत दौलत और हथियारों के बलबूते पर पाक फौज और उसके तहत काम करने वाली खुफिया ऐजेंसी बेहद ताकतवर होकर उभरी। इसी जबरदस्त ताकत का इस्तेमाल अफगानिस्तान को तालीबान के माध्यम से हथियाने में और कश्मीर में जेहादी जंग को जारी रखने के लिए किया गया।

पाकिस्तान में दुर्भाग्यवश आज भी राजसत्ता की असल शक्ति फौज के पास ही निहित है। तभी तो अपने आका अमेरिका को एक दशक से बाकायदा धोखा देते हुए फौजी इलाके एबटाबाद में आईएसआई ने अमेरिका सबसे अहम दुश्मन ओसामा बिनलादेन को छुपाए रखा। सीआईए के अफसर इस तथ्य को बखूबी जानते थे, इसी कारणवश ऑपरेशन-ओसामा अंजाम देते हुए पाक हुकूमत को विश्वास में नहीं लिया गया। जेहादी आतंकवादियों की पुश्तपनाही करने वाली आईएसआई एक निरंकुश शक्ति बनकर पाकिस्तान में स्थापित हो चुकी है, जिस पर कि पाकिस्तान की प्रजातांत्रिक ताकतें हुकूमत का कतई तौर पर नियंत्रण कायम नहीं है। प्रजातांत्रिक हुकूमत ने आईएसआई को पाक प्रधानमंत्री के प्रति जवाबदेह बनाने की कोशिश अंजाम दी थी किंतु यह कोशिश पूर्णतः विफल रही। आईएसआई की जवाबदेही पाक के फौजी कमांडर इन चीफ के प्रति कायम है। पाकिस्तानी फौज वस्तुतः राजसत्ता के अंदर ही एक स्वयंभू शक्ति के तौर पर कायम रही है जो जब चाहे प्रजातांत्रिक शक्तियों का तख्ता पलट कर देती है। यह तथ्यात्मक है कि पाकिस्तान में कट्टर मजहबी सामंतशाही और प्रगतिशील प्रजातांत्रिक ताकतों के मध्य संघर्ष जारी है, किंतु पाकिस्तानी राजसत्ता पर असल

कब्जा कहर मजहबी तत्वों का ही है। यही कारण है कि पाकिस्तान की सरजमीन का इस्तेमाल अलकायदा, लश्करएतैयबा, जैशएमौहम्मद, हरकतउल मुजाहिदीन सरीखी जेहादी आतंकवादी तंजीमे खुलकर कर रही हैं। पाकिस्तानी राजसत्ता के आतंकवादी चरित्र को समझते हुए, अमेरिका को दुनिया के साथ मिलकर उसे तत्काल एक आतंकवादी देश घोषित करने की पहल अंजाम देनी चाहिए।

पूर्व प्रशासनिक अधिकारी